

श्री देवी अथर्व शीर्षम्

ॐ कर्ण से सुनते रहे सयँ शिवम् ।
नेत्र से देखें सदा द्रश्यं शिवम् ।
हृष्ट अयं पुष्ट अपने देह से ।
पूर्णा आयु हो हमारी देवहित के कर्म में।

सुभ्यात ऽर्णव् सर्वका शुभ ही करें ।
सर्वज्ञ पुषा देव सभका शुभ करें ।
अरिष्टनेमि देव और बृहस्पति ।
देवता ये सर्व का भंगल करें ।

ॐ देवता पहुंचे सभी देवी समीप ।
प्रश्न लेकर, हे महादेवी कहें अपना स्वरूप - १
उत्तर दिया तब देवी ने कहेने लगी
मैं ही वही हूँ पूर्ण ब्रह्मस्वरूपिणी
भुजसे हुआ प्रकृति अयं पुरुष युक्त
शून्या शून्य सत् असत् सारा जगत -२

आनंद अनआनंद मैं विज्ञान मैं ।
मैं अविज्ञान ब्रह्म मैं ही अब्रह्म मैं ॥
पंचभूतात्मक अपंचभूतात्मक ।
यह जगत सर्वत्र ही मैं व्याप्त हूँ ॥

दुर्ग वसु के रूप में विहरण करुं ।
आदित्य विश्वदेव रूप विचरण करुं ॥
मैं मित्र और वरुण अग्नि ऽर्णव और ।
अश्विनी कुमारों का सदा पोषण करुं ॥ ५

सोम त्वष्टा पुषां भग सर्व ये ।
देवताओं को सदा धारण करुं ॥
विष्णुं उरुकुम ब्रह्म देव प्रजापति ।
मैं स्वयं के रूप में धारण करुं ॥ ६

देव याज्ञिक द्रव्य हवि धारण करुं ।
ब्रह्मर्षिणां धनप्रदां और श्रेष्ठ हूँ मैं यज्ञ मैं ॥
मैं सदा आत्मज्ञ बुद्धि वृत्ति मैं ।
जानता जो वह लभे देवी कृपा ॥ ७

देवता तब धन्यता से युक्त सभ ।
कहने लगे, करने लगे देवी स्तुति ॥
नमन देवी हे महादेवी नमन ।
हे शिवा है आपको कोटि नमन ॥
प्रकृतिरुपा लक्ष्मणुपा आप को ।
हम विधि पूर्वक करें सादर नमन ॥ ८

आदित्यवर्णा ज्ञानज्योति, दीप्त ली ।
कर्म इलकी दायिनी ली आप है ॥

प्राण से उत्पन्न उज्वल वाली को ।
सर्व प्राणी विश्वमें वदते सदा ॥
कामधेनु वाग्वस्वर्षा तुष्ट हो ।
हम स्तुति करते हैं देवी प्रगट हो ॥ १०

कालरात्री ब्रह्मस्तुतां आप है ।
वैष्णवी और स्कन्दमाता आप है ॥
हे सरस्वती अदिती दक्षसुता ।
हे शिवां हे पावनां सादर नमन ॥ ११

ॐ महालक्ष्मै च विद्महे सर्वसिद्ध्यैः ।
च धीमहि तन्नो देवी प्रचोदयात् ॥ १२

हे दक्ष अदिती से सभी उत्पन्न ये ।
देवता कल्याणमय अमृत समान ॥ १३

कामयोनिः आप कमला और गुहा ।
वज्रपाणि मातरिश्वा अन्न र्धन्द्र ॥
पुनर्गुहा सकल माया सर्वात्मिका ।
विश्वमाता ब्रह्मरूपां हम शरणमें ॥ १४

आत्मशक्ति और विश्व की मोहिनी ।
पाश अंकुश बाण धनु की धारिणी ॥
श्री महाविद्या हैं यह, जो जानता ।
पार हो जाता सदा ही शोक से ॥ १५

आप वसु हैं रुद्र और और आदित्य है ।
विश्वदेव सोमपा भी असोमपा ॥
यातुधाना असुर राक्षस और पिशाच ।
यक्ष सिद्धों सत्व-रज और तम भी आप ॥
आप ब्रह्मा विष्णु रुद्रस्वर्षिणी ।
आप मनु भी र्धन्द्र और प्रजापति ॥
आप ग्रहनक्षत्र ज्योति और कला ।
काष्ठ आदि आप कालस्वर्षिणी ।
ताप हारिणी लुकित मुक्ति प्रदायिनी ।
हे अनंतां विजयदां हे निर्मलाम् ॥
हे शरण्यां शिवदां देवी शिवाम् ।
आप को हे लगवती शत शत प्रणाम ॥ १७

भं र्धं कार अग्नि र कार और अर्धचन्द्र ।
सर्व साधक जीव हैं यह देवीका ॥ १८

ब्रह्म अकार यही चित शुद्ध को ।
ध्यान से आनंद अपे ज्ञानमय ।। १९

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं यामुण्डायै विर्यै ।
यह मंत्र ब्रह्मानंद सायुज्यप्रद ॥ २०

हृदय कमल के मध्य में स्थित आप है ।
प्रातः समय के सूर्य सम तेजस्वीनी ॥
पाश अंकुश धारिणी सौम्यां वरद ।

हे भयविनाशिनी हे महासंकटहरां ।
कारुण्यभूर्ति हे महादेवी नमन ॥ २२

ब्रह्मा स्वयं जो जान सकते भी नहीं ।
आप ही वह नाम देवी अज्ञेया ॥
अंत है ना हे अनंता आप का ।
हे अलक्ष्या लक्ष्य भी अज्ञात है ॥
हे अजन्मा आप ही को अज्ञा कहें ।
अेक केवल अेक अेका आप है ॥
विश्वरुपा आप नैका नाम से ।
आप अज्ञेया अनंता हे
अलक्ष्या अेक नैका ॥ २३

मातृका मंत्र शब्द में ज्ञान स्वरूपिणी ।
ज्ञान में चिन्मयातीता शून्य में शून्यसाक्षिणी ॥
श्रेष्ठ कुछना आपसे यह विश्व में ।
नाम दुर्गा आपका जगज्यात है ॥ २४

हे ज्ञानदुष्कर पातकानां विनाशिनी ।
तारकां संसार सागर देवी को ॥
जन्म संसार मृत्यु से भयभीत हम् ।
नमन कोटि देवी को शत शत नमन ॥ २५

ध्यान करता जो अथर्वशीर्षका ।
प्राप्त करता पंचाथर्वशीष इल ॥

प्राप्त कर देवी कृपा अति दुस्तर ।
कष्ट सागर पार उतरे तत्क्षाल् ॥ २६

पाठ सायंकाल में जो भी करे ।
पाप दिनभर के सभी निश्चय हरे ॥
ध्यान प्रातः काल में जो भी करे ।
पाप रात्री में हुअे वह भी कटे ॥
पाठ हो संध्या समय करता है जो ।
पाप से छूटे बने निष्पाप वो ॥
मध्यरात्री तुरीय संध्याकाल में ।
ध्यानकर्ता प्राप्त हो वाक् सिद्धि को ॥

देवता सानिध्य नव प्रतिमा समीप ।
प्राण स्थापन प्राण में हो तत्समय ॥
योग अमृतसिद्धि में देवी समीप ।
जाप करता जो महामृत्यु तरे ॥
वो महामृत्यु तरे, संपूर्ण ही ।
जानता जो देवी का यह उपनिषद् ॥

ॐ शांति : शांति : शांति : ॥

अनुवाद : त्रिलोक भेता

